भारत सरकार
परमाणु ऊर्जा विभाग
06.08.2014 को लोक सभा में
पूछा जाने वाला अतारांकित प्रश्न संख्या : 3997

विकिरण के प्रभाव पर अध्ययन

3997. श्री विद्युत वरण महतो :
श्री ओम बिरला :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) परमाणु संयंत्रों के अन्य क्षेत्रों सहित पूर्वी सिंहभूम जिले के जादुगोडा क्षेत्र और झारखण्ड के गढ़वा जिले में कुछ गांवों में शारीरिक विकृतियों से लोगों के प्रभावित होने के कारणों और उनके बचाव हेतु योजना आयोग द्वारा गठित अध्ययन समूह की रिपोर्ट का ब्यौरा क्या है;

(ख) परमाणु संयंत्रों द्वारा उत्सर्जित विकिरण के प्रतिकूल प्रभाव के परिणामस्वरूप की गई कार्रवाई का ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या सरकार का विचार नाभिकीय और विकिरण सुरक्षा के बारे में स्थानीय समुदाय हेतु जन जागरुकता कार्यक्रम आयोजित करने का है; और

(घ) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर

राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन तथा प्रधान मंत्री कार्यालय (डॉ. जितेन्द्र सिंह) :

(क) जी, नहीं। योजना आयोग द्वारा परमाणु संयंत्रों के अन्य क्षेत्रों सहित पूर्वी सिंहभूम जिले के जादुगुडा क्षेत्र और झारखण्ड के गढ़वा जिले में कुछ गांवों में शारीरिक विकृतियों से लोगों के प्रभावित होने के कारणों और उनके बचाव हेतु कोई अध्ययन वर्ग गठित नहीं किया गया है।

(ख) नाभिकीय संस्थापनाओं के प्रचालन के दौरान, विकिरण की पर्यावरण में उन्मुक्त होने वाली मात्रा को, नियामक निकाय द्वारा निर्धारित सीमाओं के काफी भीतर प्रतिबंधित किया जाता है। इसके अतिरिक्त, विद्युत संयंत्रों सहित नाभिकीय संस्थापनाओं के आस-पास किए जाने वाले पर्यावरणीय मानीटरन से यह स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि, संयंत्र के प्रचालन की वजह से आम जनता द्वारा ग्रहण की गई विकिरणसक्रियता की मात्रा, प्राकृतिक स्त्रोतों से ग्रहण की गई मात्रा की तुलना में नगण्य है, और परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद (एईआरबी) द्वारा विनिर्दिष्ट सीमाओं के भी काफी भीतर है। विश्वभर में, जिनमें भारत तथा चीन के उच्च पृष्ठभूमि विकिरण क्षेत्र (एचबीआरएज़) शामिल हैं, में किए गए

जानपदिक रोग विज्ञान संबंधी अध्ययनों से, प्राकृतिक विकिरणों की वज़ह से, लम्बे समय तक पड़ने वाले अपेक्षाकृत अधिक ऊँचे स्तर के विकिरण के प्रभाव की स्थिति में भी विकिरण संबंधी खतरों का पता नहीं लग पाया है। इन परिणामों के आधार पर, अंतर्राष्ट्रीय निकायों जैसेकि 'यूनाइटिड नेशन्स साइंटिफिक कमेटी ऑन एटामिक रेडिएशन्स' (यूएनएससीईएआर) ने यह मत दिया है कि, जनता पर निम्न स्तर के विकिरण के प्रभाव जैसेकि, नाभिकीय संयंत्रों की वजह से पड़ने वाले प्रभावों के कारण, कैंसर संबंधी खतरों का पता नहीं लगाया जा सकता। इसे ध्यान में रखते हुए, हमारे नाभिकीय विद्युत संयंत्रों के निकट रहने वाले लोगों जिनमें बच्चे भी शामिल हैं, को, जन्मजात अपंगता और कैंसर जैसे रोगों का खतरा, उन लोगों के मुकाबले में बिल्कुल नहीं है, जो इस क्षेत्र से दूर रहने वाले लोगों में प्रचलित हैं।

(ग) तथा (घ) सरकार और संबंधित सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा जन-जागरुकता कार्यक्रम पिछले काफी समय से चलाए जा रहे हैं। लोगों की शंकाओं/चिन्ताओं का समाधान करने के लिए बहु-विषयक दृष्टिकोण अपनाया जाता है, जिसमें स्थानीय विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में कार्यक्रमों को आयोजित किया जाना, दृश्य तथा प्रिन्ट मीडिया अभियान चलाना, और नागरिकों को विभिन्न सुविधाओं का दौरा कराया जाना आदि शामिल है।

* * * * * * *